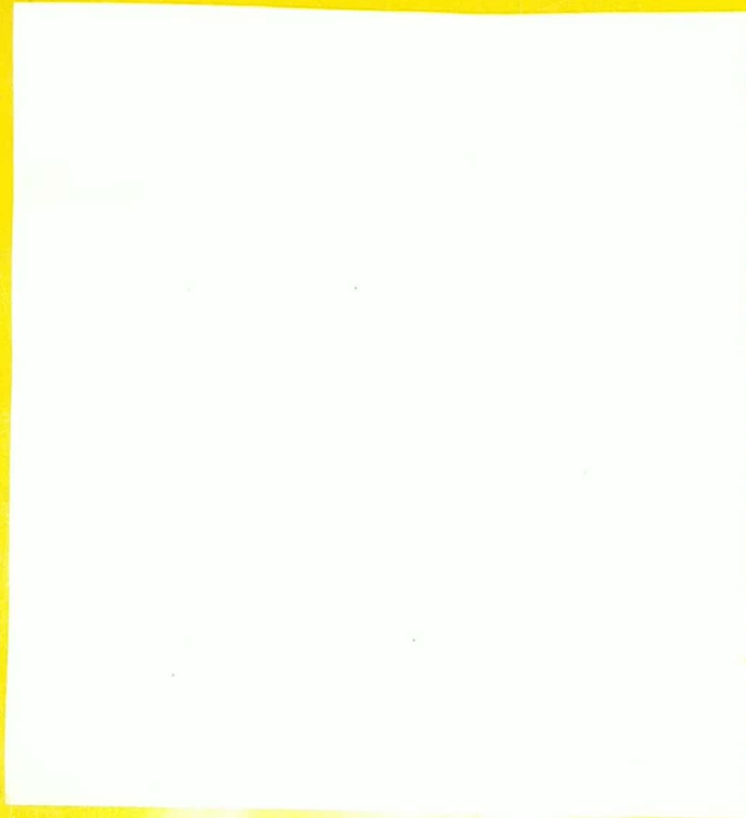
चित्रा



वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री'

भूमिका

भारतीय कविताक बीसवीं शताब्दी मे वैद्यनाथ मिश्र एकटा व्यक्ति भेलाह जे 'यात्री'क नाम सँ मैथिली मे महाकवि आ साहित्यिक युग पुरुषक रूप मे जानल-मानल जाइत छथि त हिन्दी मे प्रगतिवादी यथार्थवादी धाराक आधार स्तम्भक एकटा खास नागार्जुनक रूपे। संगहि संस्कृत आ बंगला कविता मे विशिष्ट योगदान करबाक कारणेँ एकटा बहुभाषी रचनाकारक रूप मे। मैथिली आ हिन्दीक उपन्यासक शिखर व्यक्तित्वक उँच्चाइ पर पहुँचल छथि यात्री-नागार्जुन।

1911 ई. जेष्ठ पूर्णिमाक मिथिलाक प्रसिद्ध गाँव तरौनीक एकटा अंकिचन-अल्पशिक्षित परिवार मे जन्म भेल छलैन्हि यात्रीक ताहि कालक पारम्परिक 'टोल पाठशाला' सँ संस्कृतक प्रथमा उत्तीर्ण करबा वाद वैद्यनाथ मिश्र अपन गाम छोड़लनि आ गनौलीक पाठशाला सँ मध्यमा, काशी सँ शास्त्री, कलकत्ता सँ काव्यतीर्थक विद्यालंकार परिवेशण लंका पहुँचलाह त्रिपिटकाष्चार्यक हेतु। मुदा स्वाधीनता आन्दोलन मे भागीदारी हेतु वापस आबि गेलाह आ बिहारक किसान आन्दोलन मे सक्रिय रूप सँ सम्बद्ध भ' गेलाह 1938 ई. मे। जहल सेहो गेलाह। सक्रिय प्रतिबद्ध राजनीति संगे यथार्थवादी रचनाकर्म जीवनक आरम्भे मे जे शुरू भेलैन्हि से ठेठ बुढ़ौती अर्थात् जा धरि शरीर मे दम रहलैन्हि तहिया धरि एके रंग छलैन्हि।

मैथिली, हिन्दी, बंगला एवं संस्कृत मे मौलिक रूपेँ चौवालिस टा पुस्तक क रचयिता, वहुभाषाविद्, साहित्य अकादमिक महत्तर सदस्यताक संग भारत भारती, राजेन्द्र शिखर सम्मान, मैथिलीशरण गुप्त सम्मान, राहुल सम्मान सँ सम्मानित वैद्यनाथ मिश्र यात्री नागार्जुनक देहान्त 5 नवम्बर, 1998 केँ भेल छल।

चित्राक प्रसंगेँ

'चित्रा'क प्रथम प्रकाशन 1949 ई. क दिसम्बर मे भेल छल। 'चित्रा'क प्रकाशन आधुनिक मैथिली साहित्यिक लेल एकटा ऐतिहासिक घटना थिक, जे मैथिली काव्यधाराक दशा आ दिशा बदलि देलक। 'चित्रा' मैथिली कविताक कालजयी कृति मानल जाइत अछि। शिल्प, भाषा, अभिल्प परम्परा आ आधुनिक भावभूमि आदिक दृष्टि सँ चित्राक कालजयीता एखन धरि अक्षुण्ण बनल अछि। आधुनिक मैथिली कविता के नींव 'चित्रा' पर अछि तैँ मैथिली कविताक 'यात्री स्कूल' एतेक पल्लवित-पुष्पित आ विकसित अछि।

यात्री-नागार्जुनक कवि व्यक्तित्व जतवा पुष्ट अछि ताहिना हिनक उपन्यासकार आ गद्यकार रूप अपना मौलिकता आ प्रयोगशीलता में कवि कर्म सँ उन्नीस नहीं। 'को बड़-छौट कहत अपराधु'—कहल जा सकैत अछि हिनक कवि आ उपन्यासकारक सन्दर्भ मे। आधुनिक मैथिलीक हिन्दी साहित्य यात्री नागार्जुन क जोतल-तोड़ल धरातल पर पल्लवित-पुष्पित आ विकसित भ' रहल अछि।

चित्राक प्रथम संस्करणक अविकल रूप मे डॉ. जयकान्त मिश्रक भूमिका सेहो...

—शोभाकान्त

चित्राक प्रथम संस्करणक भूमिका

अपना गामक (तरौनीक) परम व्युत्पन्न पंडित अनिरुद्ध मिश्र काव्यतीर्थक प्रेरणा सँ यात्री जी आइ सँ बीस वर्ष पूर्व काव्य-रचना दिस प्रवृत्त भेल रहथि—मुदा से अगबे संस्कृत मे।

एक बेरि पुछने रहिअन्हि तँ यात्री जी बजलाह—बड्ड बिसराह छी हम, ओ सभ की आब मोन अछि ? हँ, तखन पहिल समस्या जे हम पूर्ण कएने रही से छल 'बालानां रोदनं बलम्' आ ओकरा उपरांत अनू कका बड़की टा पाँति घाड़ पर लादि देलन्हि—पृथ्वी छंदक कोनो चतुर्थ चरण ! से हमरा प्रलय भ' गेल—कुथि-काथि क' तकरा दू दिनें पूर्ति कएल अओ बाबू !

मैथिली दिस ई झुकलाह, तकर श्रेय छन्हि कविरत्न श्री सीताराम झा केँ। विशुद्ध जनताक भाषाक प्रति हमरा लोकनि हिनक जे आग्रह देखैत छिअन्हि तकरो कारण इएह जे काशी मे चारि वर्ष (30-33) बरोबरि वैद्यनाथ बाबू कवि जीक घनिष्ठ सम्पर्क में रहलाह।

अपन पहिल उपनाम ई वैदेह रखलन्हि। पाछाँ हस्तलिखित पत्रिका 'वैदेही'क संचालन-सम्पादन करैत-करैत हिनका गद्य लिखबाक सेहो बेश अभ्यास भ' गेलन्हि। ज्योतिषाचार्य बलदेव मिश्र, मिथिला-मैथिलीक अनन्य उपासक त्रिलोचन झा (बेतिआ), रायबहादुर श्रीनाथ मिश्र आदि काशीक कतिपय मनीषी लोकनि हिनका तते ने प्रोत्साहित करैत गेलथिन्ह जे ई अपन साहित्यिक रूप ओहि बीच स्थिर कए लेलन्हि।

ओहि समयक एक-दुइटा पद्यखंड हिनक हमरा उपलब्ध अछि :

लक्ष्मी ओ लक्ष्मीवती, दुहु सम बूझथि धीर
किन्तु कने ओ चंचला, हिनक प्रकृति छन्हि थीर

तथा

दबने रहू काँख तर रेजी—
केओ देखबथु तँ तेजी !

पहिलुका कोनो रचना एहि संग्रहक लेल यात्री जी हमरा लोकनि के कहाँ द' पओलाह ? से सेहंता रहिए गेल। मोन पड़ैत अछि—ने जानि कत' ककरा मुँहेँ सुनल...

लेलन्हि सिराउड़ि सँ जतए अवतार चट
दए जानकी
जहँ मंडनादि सुधी छला' जनिका सुयश
लग चान की ?

एहि 'विचित्र' आ 'विलक्षण' व्यक्तिक विषय मे हम किछु लिख' अवस्स चाहैत छी, मुदा तखन 'भूमिका' निबंधक आकार जे धारण करत !

आइ सँ सोड़ह वर्ष पूर्व जे ई यात्रा आरम्भ कएलिन्ह से एहुखन धरि समाप्त नहि भेल छन्हि। एहि बीच हिन्दू सँ बौद्ध-बौद्ध सँ साम्यवाद, साम्यवाद सँ प्रगतिवाद, कतए-कतए ने ई गेलाह, परंच हमरा सबहिक गौरव अछि जे मिथिला के, प्राचीन मध्यकालीन वा आधुनिक मिथिलाक माटि-पानि केँ—बोन बाध केँ—हर जन केँ—कोसी लखिमा केँ नहि बिसरि सकलाह।

धँसल आँखि आ झुकल कान्ह देखि एक दिन हम कहलिअन्हि—'बहुत भेल, आब गोड़ी रोपि कतहु एक ठाम बैसू यात्री जी !'

तै पर ओ बजलाह तँ किच्छु नहि, खाली बिहुँसैत रहलाह कती काल। हुनका दिस सँ नन्हे टिपलथिन्ह—'हिनक तँ केओ टाङ तोड़ि देअए आ कतहु बैसा दैन्हि बुढ़ा केँ। हँ, सेएह !'

कत्तेक टा खेदक कथा थिक जे हमरा सबहक अपन देश—मिथिला—एहि महाप्राण मेधावीक किच्छु टा उपयोग नहि क' पबैत अछि ! जाहि लेखनीक उपयोग मैथिलीक हेतु यात्री जी करितथि ताहि सँ हुनका हिन्दी लिख' पड़ैत छन्हि ! एक दिन बेचारे खिन्न भ' क' बाजल रहथि— '*बलचनमा* लिखि रहलहुँ अछि आइकाल्हि...पेट तँ हिंदिए सँ भरैत अछि, तें अपन कोंढ़-करेज खखोड़ि जे किछु होइए से ओकरे पीड़ी पर चढ़ा रहल छी।'

से सत्ते, यात्री जी 'बादल को घिरते देखा है', 'रवि ठाकुर', 'तालाब की मछलियाँ', 'पाषाणी', 'मनुष्य हूँ', 'जनवंदना' ने जानि कतेक रास विशिष्ट रचना हिन्दी-संसार केँ देलथिन्ह अछि !! हिन्दीक प्रगतिशील कवि लोकनि मे 'नागार्जुन' रूपे यात्री जीक पर्याप्त ख्याति छन्हि—अपन प्रतिभाक बलेँ हिन्दी मे ओ जे विशिष्ट स्थान प्राप्त कएने छथि, तकर अनुमान दड़िभंगाक किंवा

'पंचकोशी'क अभ्यंतर हमरा लोकनि बैसले ठाम लगा लेब, से भ' नहि सकैत अछि।

एहि प्रबुद्ध युग मे समाज कें कोन प्रकारक कवि चाही ? की कवि लोकनि आबहुँ कमल 'कुमुद' चन्द्र सूर्य, शरद-वसंत एतबे धरि अपना कें सीमित राखथु। काव्य-रचना पर आधुनिकताक प्रभाव कते दूर धरि पड़ि रहल छैक, हिन्दी वा बंगला-गुजराती-मराठीक समकक्ष मैथिली काव्यधारा के कोन प्रकारें बुझबाक चाही ? अतुकांत रचना 'मुक्तछंद' शुद्ध शैली मैथिली किंवा संस्कृतनिष्ठ मैथिली, मैथिली काव्य मे प्रगतिशील परम्परा—आदि-आदि कतेको प्रश्न छैक। एहि संग्रह मे संकलित कविता सभ उक्त प्रश्नावलीक समाधान अनेक अंश मे क' रहल अछि। एहि महक पहिल रचना आइ सँ अठारह व्रर्ष पूर्वक थीक। 'परम सत्य' टटका थीक—दुनूक भावधारा तथा रचना विन्यास मे आकाश-पातालक भेद अछि।

यात्री जी कें अपना कथूक कोनो परवाहि नहि छन्हि। आओर तें एतेक पुरान कवि भेनहुँ हुनक कविताक पुस्तकाकार रूप ई पहिले-पहिल थिक।

—जयकांत मिश्र

एक्समस, 1949

अनुक्रम

माँ मिथिले !

मुनिक शान्तिमय पर्णकुटीमे,
तापसीक अचपल भृकुटीमे,
साम श्रवणरत श्रुतिक पुटीमे,
छल अहाँक आवास
बिसरि गेल छी से हम
किंतु ने झाँपल अछि इतिहास।

यज्ञधूम-संकुचित नयनमे
कामधेनु-खुर-खनित अयनमे
मुनिकन्याक प्रसून-चयनमे
छल अहाँक आमोद
स्मरणो जकर करै अछि छन भरि,
सभ शोकक अपनोद।

गौतम अनुमित न्यायक अथमे
याज्ञवल्क्य-दर्शित-नय पथमे
ज्ञानी जनकक जीवन रथमे
अंकित तव पद-पद्म
अछि मैथिलिक मौलि मुकुलावलि
लालित जे छविसद्म।

शारदा-यति-जयालापमे
विद्यापति-कविता-कलापमे

नान्यदेव नृपतिक प्रतापमे
देखिय तोर महत्त्व
जहि सँ आनो कहइछ जे अछि
मिथिलामे किछु तत्व।

कीर दम्पतिक तत्ववादमे
लखिमा कृत कविताक स्वादमे
विजयि उदयनक जयोन्मादमे
अछि से अद्भुत शक्ति
जहि सँ होइछ अधर्मिहुकें
तव पद-पंकजमे भक्ति।

धीर अयाचिक सागपातमे
पद्यबद्ध शंकरक बातमे
पक्षधरक प्रतिभा-प्रभातमे
छल अहाँक उत्कर्ष
औखन धरि जे झाँपि रहल अछि
हमर सभक अपकर्ष।

लक्ष्मीनाथक योगध्यानमे
कविचन्द्रक कविताक गानमे
नृप रमेश्वरक उच्च ज्ञानमे
आभा अमल अहाँक
विद्याबल विभवक गौरवमे
अहँ छी थोर कहाँक ?

काशी/दिसंबर, 1931

अंतिम प्रणाम

हे मातृभूमि, अंतिम प्रणाम

अहिबातक पातिल फोड़ि-फाड़ि
पहिलुक परिचयकें तोड़ि-ताड़ि
पुरजन-परिजन सब छोड़ि-छाड़ि
हम जाय रहल छी आन ठाम
माँ मिथिले, ई अंतिम प्रणाम

दुःखोदधिसँ संतरण हेतु
चिरविस्मृत वस्तुक स्मरण हेतु
सूतल सृष्टिक जागरण हेतु
हम छोड़ि रहल छी अपना गाम
माँ मिथिले, ई अंतिम प्रणाम
कर्मक फल भोगथु बूढ़ बाप
हम टा संतति, से हुनक पाप
ई जानि हैन्हि जनु मनस्ताप
अनको बिसरक थिक हमर नाम
माँ मिथिले, ई अंतिम प्रणाम !

काशी/नवंबर, 1936

कविक स्वप्न

जननि हे, सूतल छलहुँ हम रातिमे
निन्न छल आएल कतेक प्रयाससँ
स्वप्न देखल जे अहाँ उतरैत छी
एकसरि नहु-नहु विमल अकाससँ

फेर देखल जे कने चिन्तित जकाँ
कविक एहि कुटीरमे बैसलि रही
वस्त्र छल तीतल, चभच्चामे मने
कमल तोड़' लै स्वयं पैसलि रही

फेर देखल, कोनमे छी ठाढ़ि माँ,
किछु कह' औ' किछु सुन' चाहैत छी
भ' रहल अछि एहेन कोनो वेदना
जाहिसँ माथ धुन' चाहैत छी

श्वेतकमलक हरित कान्ति मृणालसँ
बान्हि देलहुँ हमर दुनू हाथकें
हम सशंकित, आँखि धरि मुनने छलहुँ
स्नेहसँ सूँघल अहाँ ता माथकें

बाजि उठलहुँ अहाँ हे कल्याणमयि–
सुनह कवि, हमही थिकहुँ ओ देवता
राति-दिन जकरा तकैत रहैत छ'
आँखि मुनि लए कल्पनाक सहायता

विद्ध क्रौंचक वेदनासँ खिन्न भए
वाल्मीकिक कंठसँ फूटल रही,
आइओ हम पड़लि कमला-कातमे
उपेक्षित छी, पुल जनु टूटल रही

तोहर मन दौड़ैत छहु कोठाक दिश
पैघ-पैघ धनीक दिश, दरबार दिश !
गरीबक दिश ककर जाइत छइ नजरि,
के तकइ अछि हमर नोरक धार दिश ?

क' रहल छ' अपन प्रतिभा खर्च तों
ताहि व्यक्तिक सुखद स्वागत-गानमे
जकर रैयति ठोहि पाड़ि कनैत छइ
घ'र आङन खेत ओ खरिहानमे

ओम्हर देखह, हथकड़ीसँ बद्ध कर
देशमाता छथि झुकौने माथकें
श्वेत कमलक हरित कान्ति मृणालसँ
बन्हलियहु अछि हमहु तोहर हाथकें

हाय ! ई राका निशा, तों मस्त भए
करइ छ' अभिसार नीलाकासमे
कल्पनाक बनाय पाँखि उड़ैत छ'
मंद मलयानिलक मृदु उच्छ्वासमे
तों जकर लगबैत छ' सदिखन पता
सुनह कवि, हमही थिकहुँ ओ देवता

जिनगी भरि जे अमृत मंथन करए
जिनगी भरि जे सुधा संचित करए
ओ पियासे मरि रहल अछि, ओकरे
अमृत पीवासँ जगत वंचित करए

परम मेधावी कते बालक जत'
मूर्ख रहि हा गाय टा चरबैत छथि
कते वाचस्पति कते उदयन जत'
हाय ! बनगोइठा बिछैत फिरैत छथि

तानसेन कतेक रविवर्मा कते
घास छीलथि बाग्मतीक कछेड़मे
कालिदास कतेक विद्यापति कते

छथि हेड़ाएल महिसबारक हेड़मे

अन्न ने छै कैंचा ने छै कौड़ी ने छै
गरीबक नेना कोना पढ़तैक रे ?
उठह कवि, तों दहक ललकारा कने
गिरि-शिखर पर पथिक-दल चढ़तैक रे !

हमर वीणाध्वनि कने पहुँचैत जँ
सटल-पाँजर बोनिहारक कानमे
सफल होइत तखन ई स्वरसाधना
चिर-उपेक्षित जनक गौरव-गानमे

नाव पर भए बाग्मतीक प्रवाहमे
साँझखन झिझरी खेलाइ छलाह तों
वास्तविकता की थिकई से बुझितहक
बनल रहितह जँ कनेक मलाह तों

आइ गूड़ा काल्हि खुद्दी एहिना
तोहर बहिकिरनी कोना निमहैत छहु
साँझ दइ छहु, हाय, ओ पतलो जरा
गारि फज्जति मोन मारि सुनैत छहु !

बाजि एतबा भ' गेली तों मौन माँ
बह' लागल नोर हमरा आँखि सँ
प्रगट भेल मराल, ऐल समीप किछु
फूल दनुफक झ'ड़ लगलइ पाँखिसँ

'जूनि कानह'—उठौलह तों तर्जनी
हंस पर चढ़ि उड़ि गेली अकासमे

निन्न टूटल कैल निश्चय, किछु होअओ
बिताएब नहि आयु आब प्रवासमे

जननि हे, सूतल रही हम रातिमे
निन्न छल आएल कतेक प्रयाससँ
स्वप्न देखल जे अहाँ उतरैत छी
एकसरि नहु-नहु विमल अकाससँ !

काशी/फरवरी, 1941

बूढ़ वर

घर रहन्हि वरक कमला कात
करै छला खेती साँझ-परात
मरि गेलथीन्ह जखन तेसरो बहु
सौख भेलन्हि बिआहक फेर की कहु
देख'मे सुखैल-पखठैल काठ
रुपैया बान्हि बूढ़ ऐला सौराठ
माथ छलन्हि औन्हल छाँछ जकाँ
जीह गाँझक गोलही माछ जकाँ
दाँत ने रहन्हि, निदंत रहथि
बूढ़ि रहथि, घोघा बसन्त रहथि
खा रहल छला पान तइपर
कन्यागत दइ छलथीन्ह जान तइपर
देखिकै बूढ़ वरक चटक-मटक
घुमैत-घुमैत पहुँचला घटक
पान गलोठिकें उठौलन्हि बात
पूछै लगलथीन्ह परिचय पात
हाथमे हुनक नोसिदानी रहन्हि

छाता रहन्हि, टूटल कमानी रहन्हि

उसरगल छलन्हि कि दनही छलन्हि
कुकुरक चिबौल पनहीं छलन्हि
साठा पाग रहन्हि चूनक छाँछी जकाँ
कनपट्टीक मसुबिर्ध माछी जकाँ
निमूह धनक जड़ि कटैत रहथि
पाँजि पाटिमे चेफड़ी सटैत रहथि
घटक कहलथीन्ह—"हजारेक टका लागत,
विधि-व्यवहार सै सँ ऊपर लागत
बेसी नहि, गोड़ पचासेक देब हमरो
विधाताक संग आशीर्वाद लेब हमरो
सै मे एक अछि 'कान्या', भोग होऔ
सोनमे सुगन्धिक संयोग होऔ।"

हम अजग्गि, बाप उताहुल रहथि
व्यौला रहथि, बेचै लै आकुल रहथि
शेष शुद्ध दिन नौ सै मे पटलन्हि जा क
हमर गर्दनि बाबू कटलन्हि जा क
घटक पँजियाड़ दूनू बजला मिथ्या
सिद्धांत भेलन्हि तखन उठला विख्या
सड़लि घोड़ीक एकटा एक्का कैलन्हि
सोझै फल्लाँ गामक सड़क धैलन्हि
मुन्हारि साँझकैं पहुँचैत गेला गाम
पकैत रहइ गाछीमे भरखरि आम
पसरल सबतरि बूढ़ बरक बात
आहि रे कनिया, आहि रे अहिबात
ठाढ़ होथि त लागथि धनुष जकाँ
कथी लै बुझि पड़ता मनुष जकाँ
दाढ़ी बनाओल, कपचल मोछ रहन्हि

नाक जेना टिटहिक चोंच रहन्हि
चिक्कन माथ लगन्हि काछुक पीठ जकाँ
बुझि पड़थीन्ह असर्ध जकाँ, ढीठ जकाँ
देखिकें माइकें लगलइ केहेन दन

तामसें भ गेलई घोर ओकर मन
नाक पर पसेना, कपार पर घाम
ठकुआ गेलि बेचारी ठामक ठाम
दौड़लि गेलि, बाबू कें लगलि कह'
विषादें नोर भ' क लागलि बह'–
''ई की कैल उठाक ल आनल
कमलक कोंढ़ी लै ढेंग कोकनल
बेटीकें बेचलउँ मड़ुआक दोबर
बूढ़ बकलेलसँ भरलऊँ कोबर
जनमितहिं मारि दितिअइ नोन चटा क'
कुहरए न पड़ितै घेंट कटा क'।''
पीअर झोरी दिस आँगुर उठा क'
बाबू कहलथीन्ह रुपैया देखाक–
''दूर जाउ, शुभक बेर कनै छी की
दिन घुरलइ छौंड़ीक, जनइ छी की
बनति सै बीघा खेतक मलिकाइनि
हमरा बेटी सन के हएत धनिकाइनि
बहुत भेल, रहए दिअ, जुनि किछु कहू
जाउ, 'अथ-उत मे' पड़लि ने रहू
जाउ, कन्यादानक ओरिऔन करू ग
पड़िछन करू ग, चुमौन करू ग
दुसई लै, लजबई लै, डरबइ लै
बजै अछि लोक तँ की करबइ लै।''
अहुरिया कटलक, मललक हाथ
बाबू आगाँ माइ झुकौलक माथ

हुनक अनटोटल बात एक दिस
झरकल सन हमर अहिवात एक दिस
करब की, सब पी गेलऊँ घोंटि क'
चम्पाक कली फेकल गेलऊँ खोंटि क'
बिआह-चतुर्थी सब भेलई सम्पन्न
ओ ससुर धन्न ई जमाय धन्न
हम लोहछलि, ओ रहथि आतुर
(खिसियैल बिलाड़ि नोंचे धुरखुर)
कोहबरसँ माइ लग जाइ पड़ा क'
पड़ि रहि चुपचाप देह नड़ा क'
बूढ़ा नाचै लगला हर्षे
दुरागमन भ' गेलन्हि सोझे वर्षे
मनुष रहिअन्हि अपन, ल' अनलन्हि
ताला-कुंजी सबकथु द' देलन्हि
देखिक' हमरा परभच्छय उठइए
कहिओ जँ नहिराक लोक अबइए
गराँमे पड़ल सोनक सूति
चलै लागल घरमे सब पर जुइत
बूझि पड़ि निचिंत, अछि खगते कथिक
साँइ करैत छथि डरै सिक सिक
मुदा हृदय अछि हाहाकार करैत
कोंढ़ अछि ध ध ध ध जरैत
छुच्छ कोर, आँखिमे अछि नोर भरल
ने देखल ककरो एहेन कर्म जरल
मनमे उठैत रहइए स्वाइत–
"जो रे राक्षस, जो रे पुरुषक जाति !
तोरे मारलि हम सभ मरि रहलि छी
किकिया रहलि छी, कुहरि रहलि छी
मोल लइ छैं हमरा तों टका द' क'
कनबई छैं बाप भ' क', काका भ' क'

जाइ अछि पानी जकाँ दिन हमर
जीवन भेल केहेन कठिन हमर
ककरा कि कहबइ, सुनत के आइ
फाट' हे धरती, समा हम जाइ !''

तरौनी/जनवरी, 1941

बिलाप

नान्हिटा छलौं, दूध पिबैत रही
राजा-रानीक कथा सुनैत रही
घर-आँगनमे ओंघड़ाइ छलौं,
कनिया-पुतरा खेलाइ छलौं,
मन ने पड़ै अछि, केना रही
लोक कहै अछि, नेना रही
माइक कोरामे दूध पिबैत
बैसलि छलौं उँघाइत झुकैत
परतारि क' मड़वा पर बहीन ल' गेल
की दन कहाँ दन भेलै, बिआह भ' गेल
पैरमे होमक काठी गड़ल
सीथमे जहिना सिन्नूर पड़ल
वर मुदा अनचिन्हार छला
फूसि न कहब, गोर नार छला
अवस्था रहन्हि बारहक करीब
पढ़ब गुनब तहूमे बड़ दीब
अंगनहिमे बजलै केदन ई कथा
सुमिरि सुमिरि आइ होइये व्यथा
सत्ते कहै छी, हम ने जनलिअइ
हँसलिअइक ने, ने कने कनलिअइ

बाबू जखन मानि लेलथीन
सोझे वर्षे दुरागमनक दिन
सिखौला पर हम कानब सीखल
कपारमे मुदा छल कनबे लीखल
सिन्नूर लहठी छल सोहागक चीन्ह
हम बुझिअइ ने किछु उएह बुझथीन्ह
रहै लगलौं भाइ-बहीन जकाँ
खेलाय लगलौं राति-दिन जकाँ
कोनो वस्तुक नहि छल बिथूति
कलेसक ने नाम दुखक ने छूति
होम' लागल यौवन उदित
होम' लागल प्रेम अंकुरित
बारहम उतरल, तेरहम चढ़ल
ज्ञान भेल रसक, सिनेह बढ़ल
ओहो भ' गेला बेस समर्थ
बूझै लगला संकेतक अर्थ
सुखक दिन लगिचैल अबैत रहै
मन आशाक मलार गबैत रहै
बन्हैत रही बेस मनोरथक पुल
विधाता बूझि पड़ै छल अनुकूल
दनादन दिन बितैत रहै
अभागलि हैब, से क्यौ ने कहै
एक दिन उठलन्हि हुनका दर्द
टोल भरिमे भ' गेल आसमर्द
कतै वैद डाकदर बजाओल गेला
तैयो ने हाय ओ नीकें भेला
बहार कै देलकन्हि लोग आबि क'
जान लै लेलकन्हि रोग आबि क'
बैतरणीमे उसरगल गेलन्हि बाछी
उठा क' ल' जाइत गेलथिन्ह गाछी

पोखरिपर लहठी फूटल हमर
सीथसँ सिन्नूर छूटल हमर
ठोहि पाड़िक हकन्न कनैत रही
एना हैत से की जनैत रही
लगै अछि चारू दिस अन्हार जकाँ
ने बूझि पड़ै क्यो चिन्हार जकाँ
विष सन अवस्था, पहाड़ सन जीवन
संसारमे हमर के अछि अपन ?
कानी तँ चुप कैनिहार क्यौ नहि
रूसी तँ बौंसनिहार क्यौ नहि
हम पड़लि छी टूटल पुल जकाँ
मौलैल, बिनु सूँघल फूल जकाँ
आगि छुबै छी तँ जरैत ने छी
माहुर खाइ छी तँ मरैत ने छी
कोंढ़ फाटै मुदा ने जाय जान
कोन पाप कैने छलौं हे भगवान
भरल आँगन सुन्न हमरा लेखै
फूजल घर निमुन्न हमरा लेखें
लोक अलच्छि बुझैए, अशुभ बुझैए
अनके नहि, से अपनो सुझैए
बिनु बजौने कतौ जाइ ने आबी
मुँहमे लगौने रहै छी जाबी
भुस्साक आगि जकाँ नहू नहू
जरै छी मने-मने हमहू
फटै छी कुसियारक पोर जकाँ
चैतक पछवामे ठोर जकाँ
काते रहै छी जनु घैल छुतहड़
आहि रे हम अभागलि कत बड़
भिन्सरे उठि प्रातःस्नान क' क'
जप करै छी हुनके ध्यान ध' क'

धर्मसँ जीवन बिताबे चाहै छी
इज्जति आबरू बचाबे चाहै छी
तैओ करै चाहै छथि हमरा नचार
केहेन केहेन ठोप चानन कैनिहार !
ओहनाक सङे जँ हम खाधिमे खसी
ओ नुकैले रहता, हमर हैत हँसी
स्त्रीगणक जाति हम थिकौं अबला
तहू पर विधवा, कहू त भला !

पुरुषक जाति ओकरा के की कहतै
ओकरे समाज ओकरे बात रहतै
उठा लितथि बरु भगवान हमरो
कथी लै भारी लगितिअइ ककरो
मरब तँ कानत क्यौ नहिएँ
रहब तँ क्यौ जानत नहिएँ
इहो जीवन कोनो जीवन थीक
एहिसँ कुकुर-बिलाड़िए नीक
माय-बापक मनोरथक शिकार भ' क'
बेकार भ' क, दबल हाहाकार भ' क'
पँजियाड़ औ' घटकराजक नामपर
व्यवस्था औ' समाजक नामपर
विधवा हमरे सन हजारक हजार
बहौने जा रहलि अछि नोरक धार
ओहीमे ई मुलुक डूबि बरु जाय
ओहीमे लोक-वेद भसिया बरु जाय
अगड़ाही लगौ बरु बज्र खसौ
एहेन जाति पर बरु धसना धसौ
भूकम्प हौक बरु फटौ धरती
माँ मिथिला रहिये क' की करती !

तरौनी/जनवरी, 1941

कौसिकीक धार

कौसिकीक धार
नावपर बैसि जखन करै छलहुँ पार
देखि तखन रुद्र हुनक रूप
मोन पड़ल पोखरि मोन पड़ल कूप
डूबल भसल मोन पड़ल नाव
मोन पड़ल हैजा मलेरियाक ताव
उपटल सन डीह-डावर सुन्नसान गाम—लेवलै नाम
रहल होइ वंशमे क्यों ने जाहि ठाम
कल्पना ताहि ठाँक जोड़ै लागल तार
नावपर बैसि जखन करै छलहुँ पार
—कौसिकीक धार

कहतैन्ह के हिनका अरे दयालु !
एक दिस कुस-कास दोसर दिस बालु
नङटे नचै छैन्ह बीचमे हहैल-फुहैल धार
थिकै ककर दिन जे जैत ओहि पार
कोसक कोस झौआ जौं ने भेटै ठाढ़
बूझि लेब जे थिकैक मास ई अषाढ़
कुम्हीक लैत अऽढ़
चारक पुरान खऽढ़
कोड़ो धरैत खाम्ह
बरेड़ीक संग संग
छल जा रहल बहैत
उपराग उलहन दैत
—देखि भेलहुँ दंग
क्षीर सागर मे सुतल भगवान कें करबाक हेतु तंग
जाइत रहै, बूझि पड़ल, कौसिकीक धार
नावपर बैसि जखन करै छलहुँ पार
—कौसिकीक धार

गाछी सुखा गेल
कलमबाग नष्ट भेल
उजड़ल देहात
बिगड़ल बसात
लोकवेद बेहाल
पड़ल अकाल
मुइल माल-जाल
कतहु रहल ने शेष
आरि धुरक ने रेख
लै गेली बहाय सभक
खेत औ' पथार
कौसिकीक धार !

पटना/जून, 1943

प्रेयसी

ठाढ़ि भेली आबि तों तैखन कहाँसँ
हे हमर हीरा, हमर मोती, हमर हे सोन !
चिन्तनाक अथाह जलमे लगौलक डुबकी
—जखन ई मोन !
उठाओल चिरकाल सँ निहुँड़ल अपन ई माथ
कान्हपर जैखन देलह तों हाथ !
हे हृदय ! हे प्राण !

तों ने रहितह संगमे
तँ क' ने सकितहुँ हिमगिरिक अभियान !
रोहिणिया आमक सुपक्क गोपी जकाँ तों
करै छह सदिकाल गमगम सजनि हमरा हेतु

सकै छथि क की हमर ओ राहु आ, की केतु
जाबत तोंही केंद्रमे छह राति-दिन साकांक्ष ?
चिर वियोगक आगिमे
तोरा जखन हम ठेलि बनलहुँ
परिब्राजक एसगरे ओहि बेर सखि चुपचाप
कते सहने रह तों परिताप ?
बहुत दिन पर ज्ञान एतबा भेल जे हम
केहेन निष्ठुर केहेन निर्मम, केहेन पाषाण !
हे हृदय ! हे प्राण !
अपन इच्छापर तोहर आशाक कैलियहु होम
तों बनलि रहली सदै सखि मोम !
जखन तोरा लग एलहुँ फेर,
क्षमा कैलह हमर सब अपराध
कनियो ने लगौलह देर !
बाजि उठली सुमुखि तों बिहुँसैंत–
की करबैक लै एहिना एलैऐ हैत !
एक आँखि कनैत अछि जग एक आँखि हँसैत !
कोनो कारणसँ कदाचित रहै अछि जँ स्त्री-पुरुष दुइ ठाम
बढ़ल जाइत छइ सिनेह, ने हैत छैक विराम !
हैत एलैऐ सदै संयोग आ, कि वियोग
हमहूँ लेलहुँ भोगि, ता' भोगबाक छल जे भोग !
एकसँ दू भेलहुँ प्रियतम,
आब मिलि-जुलि क' सकब
हमरा लोकनि घरबाहरक कल्याण
आउ, स्वागत
हे हृदय! हे प्राण !

जै दियौ गऽ
अहाँ की करबैक लै
एहिना एलैऐ हैत...

बाजि उठली सुमुखि तौं बिहुँसैत !

आइयो तँ छी समुद्रक कातमे हम ठाढ़
(हम एम्हर छी तों ओम्हर छ बीचमे व्यवधान–
एक डेढ़ हजार कोसक !
की करौ स्थलयान वा जलयान ?
कते व्यक्ति बजैत छथि जे
एहि युद्धक बाद खूब हेतैक सस्ता विमान !)
हे हृदय, हे प्राण !

बंबई/अप्रैल, 1945

फेकनी

छैं रखने पौआही फुच्ची दैवहिक देल,
दै छही मिला तइओ अँटकर सँ पानि नित,
तइओ तोरहिसँ दूध उठौना लैत छिअउ
टिप्पी टा देने जाइत छैं
से नहि कहियो बिसरल ताकहि।
बान्हल छउ दूटा बूढ़ि गाए दच्छिनबरिया ओरियानीमे
बेचलएहें बाछा गोड़ पाँचेक कोरियानीमे
बाछी नहि छउ जे रखितैं बैतरनीक हेतु
गै, क्यौ नहि औतहु काज, कथीलै छैं बेहाल ?
ने खाई छही ने पिबइ छही बहिते रहैत छैं सदरिकाल
की करबैं तों कैंचा बचाय
गै, बेटा पीबै छउ ताड़ी।
टाड़ामे रखबै नुका नुका ?
क लेतउ पुतहु ओहो बहार !
ओहू दिन देखने रहिअउ जे तोहर दलान लग

ठाढ़ रहौ रूपन सोनार
अपने तों सहजहि बूढ़ भेलैं
भ गेलै नातियो सभ समर्थ
कर दान-पुन्न, कर तीर्थ-बर्त
गै फेकनी, तों कपिलेस्सर जो !
दसहरा एलइ
सपनहुँमे नहि तों गेल हेबै
एहि जन्म सिमरिआ घाट—हे गै !
जो भऽ आ ग,
संगी-साथी लै नहि खगतउ—
टुनटुन जाइत छथि सपरिवार
मैना पीसी सेहो जैती आ, यारकका सेहो जेता;
की ग्वार-गोढ़ि की तेलि-सूँड़ि
सब जाय रहल गंगा नहाय !
दसहरा एलइ
गै फेकनी, तहूँ भ आ ग, की करबै तों कैंचा बचाय,
बरु नातिनिएँकें कहि जैहइ—
पौआहीसँ दू फुच्चीकँ ता देल करत बरु दूध वैह,
सिखतउ परोच्छमे तोहर गुन
देतैक मिला छौंड़ी अँटकरसँ पानि नित्त
टिप्पी देमऽ अबिते हेतैक !
की करबें तों कैंचा बचाए
फेकनी गै, जो कर तीर्थ-बर्त
बुचिया, बचबा, आ कंचनमा
भ गेलउ नाति तीनू समर्थ
जिनगीक ठेकाना कोन,
आब तो सहजहिँ पाकल आम भेलैँ !
दै छही मिला तइओ अँटकर सँ पानि नित
छैं रखने पौआही फुच्ची दैबहिक देल...

बंबई/अप्रैल, 1945

लखिमा

कवि कोकिलक कल-काकलिक रसमञ्जरी
लखिमा, अहाँ छलि हैब अद्भुत सुन्दरी
रुष्ट होइतहुँ रूपसी
कहि दैत कियो यदि अहाँ के विद्यापतिक कवि-प्रेयसी
अहाँ अपने मौन रहितहुँ
कहनिहारक मुदा भ जइतैक सत्यानाश !
मानित'थिन ईह !
सुनित'थिन शिवसिंह तऽ घिचबा लित'थिन जीह !
दित'थिन भकसी झोंकाय तुरन्त
क दित'थिन कविक आवागमन सहसा बंद
अहूँ अन्तःपुरक भीतर
बारिकँ अन्न-पानि
सुभग सुन्दर कविक धरितहुँ ध्यान
बूढ़ि बहिकिरनीक द्वारा
कोनो लाथें
अहाँकें ओ पठबितथि संदेश–
(सङहि सङ झुलफीक दुइटा केश !)
विपुल वासन्ती विभवकेर बीच विकसित भेल
कोनो फूलक लेल
लगबथुन गऽ क्यौ कतेको नागफेनिक बेढ़
मुदा तैं की भ्रमर हैत निराश ?
मधु-महोत्सव ओकर चलतइ एहिना सदिकाल !
कहू की करथीन क्यौ भूपाल वा नभपाल
अहाँ ओमहर
हम एम्हर छी
बीचमे व्यवधान
राजमहलक अति विकट प्राकार
सुरक्षित अन्तःपुरक संसार

किन्तु हम उठबैत छी
कोखन कतहुँ जँ
वेदना-विह्वल अपन ई आँखि
अहींटाकें पाबि सजनि ठाढ़ि चारू दिस
विस्मय विमोहित कंठसँ बहराय जाइछ 'ईस' !
खिन्न भ' अलसाई जनु धनि
वारि जनु दिय अन्न किँवा पानि
व्यर्थ अपनहि उपर कौखन करि जनु अभिरोष
विधि विडम्बित बात ई, एहिमे ककर की दोष ?
नहि कठिन खेपनाइ कहुना चारि वा छौ मास
देवि, सपनहुँमे करि जनु हमर अनविश्वास
अहिंक मधुमय भावनासँ पुष्ट भय
प्रतिभा हमर
रचना करत से काव्य
जाहिसँ होएताह प्रसन्न नरेश
पुनि हमरो दुहुक मिलनाइ होएत—
सखि, सहज संभाव्य।

अहाँकें कवि पठवितथि संवाद
पावि आश्वासन अहाँ तत्काल अनशन छाड़ि
होइतहुँ कथंचित् प्रकृतिस्थ !
मनोरंजन हेतु—
हंसक मिथुन अंकित क' देखबितए
कोनो नौड़ी,
कोनो नौड़ी आबि गाबिकँ सुनबैत
ओही प्रियकविक निरुपम पदावलि
जाहिसँ होइत अहाँकेर
कान दुनू निरतिशय परितृप्त !
चित्त होइत तृप्त !
घृणा होइतए महाराजक उपर

धिक धिक !
स्वयं अपने
एकसँ बढ़ि एक एहन
निरुपम गुणसुन्दरी शत-शत किशोरीकें
विविध छल-छंदसँ
किंवा प्रतापक प्रबलतासँ
पकड़ि कए मँगवाय
अन्न-जल भूषण-वसन शृंगार सामग्रीक ढेर लगाय
सुरक्षित अन्तःपुरक एहि अरगड़ामे
बनौने छथि कैकटा रनिवास
बंदी शिविर सन डेरासभक क्रम-पात
एककें दोसराक सङ नहि रहइ जाहिसँ मेल
चक्रचालि चलैत छथि ताहि लेल
कखन करथिन ककर आदर वा ककर सम्मान–
घटौथिन ककर कखन दिनमान–
अही चिंतामे सदए लागल रहए हमरासभक जीजान
महाराजक चरण सम्वाहन करऽमे
सफल होइछ
एक मासक भितर जे दुई राति
पुण्यभागा सुहासिनि अभिशप्त से देवांगना
नहि थीक स्त्रिगणक जाति !
अभागलि कै गोट होएत एहन जकरा
छूबि छाबि कनेक
देने छथिन पुनि अनठाय
मने ओसभ गाछसँ तोड़लाक उतर
कने दकरल लतामक थुरड़ी जकाँ हो
एम्हर-ओम्हर पड़ल पांडुर
कोनो अगिमुत्तूक निर्मम निठुरताक प्रतीक !
सुनई छी, राजा थिका नारायणक अवतार
करवाक चाही हुनक जय-जयकार

किंतु भगवान सेहो
क्षीरसागर मध्य
एहिना आड़्बाल रचि विचरैत छथि ?
इच्छानुसार करैत छथि अभिसार–
आइ ककरो
काल्हि ककरो
इन्दिराकें बाध्य भ की एहिना
अनका बनाव' पड़इ छनि हृदयेश ?
...तुमैत एहिना तूर
जाइत होएब अहाँ बहुतो दूर
भावनाक अनन्त पथ दिस
एकसरि चुपचाप...
तुमैत अहिना तूर !
विद्यापतिक कविताक हे चिरउत्स, हे चिरनिर्झरी !
लखिमा, अहाँ छलि हैब अद्‌भुत सुंदरी !

पटना/जनवरी, 1945

उड़ान

कल्पनाक पाँखि
प्रेयसीक आँखि
सहि सकत हमर स्वप्न केर भार ?
बजा सकत हमर हृदय-वल्लरीक तार
तापसिक कठोर
तर्जनीक पोर ?

सुरभि मृदु समीर
परसि ई शरीर
कै सकत एहिमे चेतना प्रदान ?

गाबि सकत हमर मुक्तवृत्त करुण गान ?
सागरक तरंग
मधुरताक संग
तप्त मरुक भूमि
एलहुँ हम घूमि
जनिक स्मरण-सलिल सिक्त हृदय रहल थीर
बूझि पड़ल बालु आ कि रेत जनु अबीर
की तनिक नाम ?
कोन हुनक गाम ?

पड़ल जखन साँझ
घोर विपिन माँझ
तहि समय मूनि आँखि शरण जकर लेल
सएह त ने तों थिकी, नाम बिसरि गेल।
एहने अनूप
मोन पड़ए रूप

बेश, रह' सएह
मुदा छाड़ि दएह
एखन उड़ल जाइछी नील गगन दिस
संग सखा एक नहीं, पाँच-दस-बीस
अप्सरा नचैछ
हृदयकें जँचैछ !

बंबई/मार्च, 1945

गामक चिट्ठी

चिट्ठी पठौत देरी तुरंत
भ जैब बिदा

जँ हाथ होए खाली तइओ...
से लिखलनि अछि बउआक माइ
अपनहि हाथैं !

झट आउ गाम,
नहि आबी त हमरे सप्पत;
जँ होए एको रत्ती सिनेह बेटाक हेतु
जनु अनठबियौ
भ जाउ बिदा चिट्ठी पबैत देरी तुरंत
से लिखलन्हि अछि अपनहि हाथैं बउआक माइ !

पछुअति दिस चुबै छल परुकों
जनितहि छी भनसाघरक चार
एहि बेरि ने मानल जैत
छराबहि पड़त पुरनका खऽढ़ उछेहि
बाती पुरान
बन्हन सेहो सड़ि गेल छैक
सजमनिक रहै लत्ती लतरल
गोन्हू कन्हाई बौका करिया सबहक पैरें
धाङ्ल गेलैक अछि राति-दिन
फड़ितहुँ रहैक सरिपहुँ कत्ते
खैलक अछि भरि टोलाक लोक
दुद्धी सजमनि
बतिया सजमनि
से एहि बेरि
अति आबस्सक अछि घर छरएब–
ई लिखलनि अछि बउआक माइ !

बउआ तकैत अछि बाट सदए
बाबू-बाबू करितँहि रहैत अछि ओ सदिखन

बिनु बीटहुँ ओ
चिट्ठीक खातिर
दरबज्जा दिस
ताकऽ जाइत छइ डाकपीनकें अपनहिसँ
पबितँहि लिफाफा वा पोसकाट
दउड़ल अबैत अछि आङन दिस
देहरि लग
नाच लगैत अछि ओ हर्षे
हम्मल बाबू...हम्मल तिट्ठी
हम्मल तिट्ठी...हम्मल बाबू
जो नइ देबौक...
हम्मल बाबू...
हम्मल तिट्ठी...
नाच' लगैत अछि ओ हर्षे
एह, धन्न, रहू
एतबे दिनमे
ओ कोना बिसरना गेल, एह!
ओकरा त ओहिना मोन छिअइ
ओ तँ तकैत अछि बाट सदए
बाबू-बाबू करितहिं रहैत अछि ओ सदिखन
आ एहि साल
की मूड़न नहि करबई ओकर ?
ई चैत थिकइ
जेठहिसँ चारिम चढ़ि जेतइ
तकबा क कोनो नीक दिन
नहि बेसी तँ
खाली पातड़िओ द दिएन्हि भगवत्तीकें
दूटा छागर छन्हि कबुला से ताबे रहौन्ह
तइओ त चाही एक गोट दसटकही हमरा तातकाल
मुदा अहाँ

जँ हाथ होए खाली तइओ...
से लिखलनि अछि बउआक माइ
अपनहि हाथैं !

झट आउ गाम,
नहि आबी त हमरे सप्पत;
जँ होए एको रत्ती सिनेह बेटाक हेतु
जनु अनठबियौ
भ जाउ बिदा चिट्ठी पबैत देरी तुरंत
से लिखलन्हि अछि अपनहि हाथैं बउआक माइ !

पछुअति दिस चुबै छल परुकों
जनितहि छी भनसाघरक चार
एहि बेरि ने मानल जैत
छराबहि पड़त पुरनका खऽढ़ उछेहि
बाती पुरान
बन्हन सेहो सड़ि गेल छैक
सजमनिक रहै लत्ती लतरल
गोन्हू कन्हाई बौका करिया सबहक पैरें
धाङल गेलैक अछि राति-दिन
फड़ितहुँ रहैक सरिपहुँ कत्ते
खैलक अछि भरि टोलाक लोक
दुद्धी सजमनि
बतिया सजमनि
से एहि बेरि
अति आबस्सक अछि घर छरएब—
ई लिखलनि अछि बउआक माइ !

बउआ तकैत अछि बाट सदए
बाबू-बाबू करितँहि रहैत अछि ओ सदिखन

बिनु बीटहुँ ओ
चिट्ठीक खातिर
दरबज्जा दिस
ताकऽ जाइत छइ डाकपीनकें अपनहिसँ
पबितँहि लिफाफा वा पोसकाट
दउड़ल अबैत अछि आङन दिस
देहरि लग
नाच लगैत अछि ओ हर्षे
हम्मल बाबू...हम्मल तिट्ठी
हम्मल तिट्ठी...हम्मल बाबू
जो नइ देबौक...
हम्मल बाबू...
हम्मल तिट्ठी...
नाच' लगैत अछि ओ हर्षे
एह, धन्न, रहू
एतबे दिनमे
ओ कोना बिसरना गेल, एह!
ओकरा त ओहिना मोन छिअइ
ओ तँ तकैत अछि बाट सदए
बाबू-बाबू करितहिं रहैत अछि ओ सदिखन
आ एहि साल
की मूड़न नहि करबई ओकर ?
ई चैत थिकइ
जेठहिसँ चारिम चढ़ि जेतइ
तकबा क कोनो नीक दिन
नहि बेसी तँ
खाली पातड़िओ द दिएन्हि भगवत्तीकें
दूटा छागर छन्हि कबुला से ताबे रहौन्ह
तइओ त चाही एक गोट दसटकही हमरा तातकाल
मुदा अहाँ

नहि करी एहि सबथुक चिंता
देखल जयतइ
चिन्ता केने की हैत फऽल
चल आउ गाम
जँ हाथ होए खाली तइओ...
ई लिखलन्हि अछि बउआक माइ !

खेपब हम चरखा काटि, मुदा
नहि जाएब नइहर एहि बेर ओहि साल जकाँ
नहि कहा पठैबन्हि काकाकें
हम एहि बेरि ओहि साल जकाँ–
"गाड़ी ल क कनहा आवओ
सड़े सड़े बुच्चो अबथुन्ह
ल जाथु एतसँ ओ हमरा
छौड़ाक देह सड़ि गेलइ अछि
नहि बचतइ ओकर जान आब
भुस्सो परजंत ने छइ घरमे
हम की करिअउ
काका बुच्चोकें पठा दियनु..."
नहि कहा पठैबन्हि से हुनका
हम एहि बेरि ओहि साल जकाँ
काटब चर्खा, काटब टकुरी
हम खेपि लेब अप्पन कहुना
जँ सैह अहाँकें होए बेश
हम वृत्त बनल छी अचार भूखैं टटाय
नहि कहब किच्छु
हम अलट-बिलट नहि किछु बाजब
चल आउ गाम
जँ हाथ होए खाली तइओ
नहि आबी त हमरे सप्पत...

आबहु नहि आएब तँ अबस्स हम देब तार...

मोड़ल-माड़ल ओ मैल सनक
एहि पोस्टकार्ड पर लिखलन्हि अछि
कौआक टाङ सन अच्छरमे
बउआक माइ
अपनहि हाथें !

बंबई/अप्रैल, 1945

ठीठर मामा

ठीठर पाठक
पितरपच्छमे गेल छलाह गया जी
भागिन छलथिन्ह बी.ए. मे से
हुनेक आग्रह मानि
पटनामे दू दिन रहबालै भेला कहुना राजी

'सोनमणि भवन' मैथिलक होटल नामी अछि ओहि ठाम
मुदा ओत नहीं ल सकैत छी इच्चो माछक नाम
की करता मैथिल बेचारे सौंसे पेटक लेल–
जीहि सैंतने रहथि राति-दिन आधा वैष्णव भेल !
जीबछ ठाकुर,
ठीठरक भागिन
ओहि होटलक ऊपर
रखने छलथिन्ह डेरा...
रतुका रहन्हि जगरना, तइसँ
ठीठर मामा
खा-पिबि रहला सूति

बाँकी छलइ कने दिन तक्खन जा क' टुटलन्हि निन्न
ऊठिक-पूठिकें कैलन्हि कूरुड़
जनउ चढ़ौलन्हि कान–
छर छर छर छर...
मोड़ीमे नहि कङनीपरसँ लग्घी ओ क ऐला
रच्छ रहल, पछुआड़ छलइ, तैं
नहि तँ खैतथि मारि
ठीठर मामा खइतथि सरिपहुँ मारि
के खइतए तक्खन रसगुल्ला पिन्टू होटल जाय ?
गोल-गोल ओ उज्जर उज्जर अतिशय शोभन
सरस स्वादु सुरमुनि मनमोहन
रसगुल्ला के खइतए ?
चुनबए लगला जखन तमाकू, तइखन जीबछ आबि
कह लगलथिन्ह--चलू सिनेमा
मामा, बढ़ियाँ खेल एलइए
नाच गान औ' रागरंग एहन नहि देखने हैब
दड़िभंगोमे देखि सकइ छी आब सिनेमा
मुदा ओहिठाँ एहेन बढ़िम्मा कत सँ अओतइ खेल ?
नहि मानब हम लइए जाएब, मामा देखऽ लेल
नौ आनाक सीट पर बैसल ठीठर बाबू
देखइ छलाह सिनेमा
भागिन रहथिन्ह संगहि
देखि देखिकँ अजगुत लगलन्हि...
कोना नचइए कोना गबइए एत्ते छौंड़ा-छौंड़ी
पर्दापर भ ठाढ़
कोना बजइए कोना झुकइए...
थुकरि तमाकू ठामहिं,
पाँखुड़ पकड़ि पुछलथिन्ह ठीठर जीबछकें तातकाल
(फुसुर-फुसुर क')–
की हओ बाबू, कोना बनौने हैत ?

एहेन कल अङरेज बहादुर कोना बनौने हैत ?
पछुअति दिस छइ भूर कैल ताहींसँ अबइ इजोत
अगुअति दिस पर्दा छै टाङल
लगातार ताहीपर, बाबू
कौखन छाहरि कौखन पड़इ इजोत...
भागिन देलथिन्ह डाँटि–
देखू मामा, एखन रहू चुपचाप !
बेटासँ तकरार करई छै बाप !
पुतहु लैत छै, देखियहु, कक्कर पच्छ ?
जे पूछक हो से सब डेरापर जाक पूछि लेब
फड़िछा फड़िछा बात बुझा हम देब !

पिन्टूमे जाइत जखन गेलाह,
चारि कचौड़ी चारि सिंघाड़ा दू-दू टा रसगुल्ला
तइपर पिउलन्हि चाह
आप्यायित भ श्री ठीठर पाठक पुनि बजलाह–
आब ने कहियो कहबइ, हओ, हम मग्गहकें अधलाह

जाय महेन्द्रू
देलथिन्ह टिकट कटा
सीढ़ीसँ भ हेठ
तखन घाटपर दाहिना हाथें दुहु पएर छुबि
मामाजीकें गोड़ लागि कँ
कने काल धरि भागिन हुनका दिस छलथिन्ह तकैत–
जेटी पर भ ठाढ़...
दालि भात दू टा तरकारी–दुहू झिङुनिक !
(भुजबी सेहो झिङुनिक)
चटनी-पापड़
चारि फाँक ओ आठ खंडमे सँ खंडो भरि नेबो !
नहिए कहिओ सेहो !

निश्चय दुक्खित पड़ि जाइ,
बाबू, तोरा होटलमे जँ चारि-पाँच दिन खाइ !
गून करत हओ बाबू
अइठाँ नइ तँ गाम जाय क ई पचौल मेरिचाइ...
ई बजैत श्री ठीठर पाठक चढ़ला जाए जहाज !

पटना/फरवरी, 1946

परमिटक साड़ी

कुड़ कुड़ कुड़ कुड़
क' उठल दाँत तर जइतहि तिलकोड़ाक पात
तीसीक तेलमे स्वाद कोन !
गिड़ि लेल कोहुना मोन मारि
गतिआक चालिपर गेल ध्यान
ओ तेलि थीक
पहिरए लागल अछि आइ काल्हि—
खधड़क अंगा, खधड़क टोपी
ओ नोन नुकाकँ रखने अछि भनसाघरमे
दू-दू आनामे बेचइए दीआसलाइ
हनुमान चालीसा पाठ करइए साँझ-प्रात...
कुड़ कुड़ कुड़ कुड़ कुड़ कुड़ कुड़ कुड़
क' उठल दाँत तर जइतहि तिलकोड़ाक पात !

आगूमे बइसलि रहथि मुदा कनियाँ काकी—
बीअनि हौंकैत;
कुट्टी-कुट्टी भ' गेलन्हि साड़ी हुनकर
बढ़ियाँ लगैत अछि हमरा कुम्हड़ौड़िक तीमन
परसन ल' ल' क' खाइत छी...

नहि ओहि दिन से खैल गेल...
हम दउड़ल दउड़ल गेल रही परमिटक लेल
परमा बाबू के दरबज्जापर
ओ गेल रहथि झंझारपुर
किछु काज छलन्हि
लाइसेन्सबला मरबड़िआसँ
हम ओत्त' धरि
हुनका पिठिओने गेल रही
ओ बजला : अओजी, चउअन्नी बेहरी लागत...
परमिट चिट्टकें हथियबैत
गाहकि दिस गहकी नजरि मारि
सूरजमल मरवाड़ी बाजल—
बरहत्थी साड़ी एकमात्रटा बाँचल अछि,
सेहो खोंचाह...
की अहाँ सभक आङनमे एहन वस्त्र छजत ?
हँ, भ' सकैत अछि, बहिकिरनीकें ददिऐक...
हे लिअ' तीन टका लागत ।
रहि गेलहुँ गुम्म,
की कहितिऐक ?
बरहत्थी साड़ी अति अभद्र
ने पाढ़ि नीक ने सूत नीक, खर खर करैत
सेहो खोंचाह...
एहन विचित्र साड़ी कहुना देलिएन्हि आनि
देलन्हि ताहू पर आसिरबाद
कनियाँ काकी
ढाकिकऽ ढाकी !

पटना/अगस्त, 1946

कृत्तिका नक्षत्रमे

कृत्तिका नक्षत्रमे शशि—
कोदरिकट्टा मेघसँ
झगड़ा करैत छलाह
हम रही टहलैत धानक आरि पर ओहि काल
हाथसँ छुबि देखलिअइ तँ
स्वर्णकेशी सुंदरिक अलकावली सन बुझि पड़ल
आसिनक सिताहल सीस
मोन हमरा पड़ल केसरि काशमीरक
ओ, शिरीखक फूल
ओह, कोसक कोस धनहर बाध
हरिअरिक सागर जकाँ हिलकोर रहि रहि लैत
ताहिपर सँ अमृत किरणक मृदुल आभा छलइ
किछु छछलैत
हरितवसना शस्यलक्षितक अंचलोदितपत्रमे
कृत्तिका नक्षत्रमे।

तरौनी/अक्टूबर, 1946

हिमगिरिक उत्संगमे

हिमगिरिक उत्संगमे
देवदारुक विपिन-मध्य घुरैत
पहुँचलहुँ अलकापुरी
देखल विरहिणिक अस्थि संचित भेल
उठल तामस मेघपर
पाबिओ कँ कालिदासक निष्कपट आशीष
आइधरि जे एहिठाँ नहि ऐल
भेल हमरो मोन जे पल्था लगाबी हमहु एहीठाम

आ' कि ताबहि प्रगट भेली
वियोगिनि तों
स्मृतिक धोखरल रंगमे
हिमगिरिक उत्संगमे !

प्रयाग/1946

भए गेल प्रात

हिम शुभ्र ओससँ धौत गात
भूपर उतरल नभसँ प्रभात
सिहकए लागल मलयानिल जे
खोलू केवाड़;
भए गेल प्रात
चों चों चों चों...
कए रहल मने बगड़ा-बगड़ी
खोतासँ बहरएबाक ब्योंत
भए गेल प्रात
टुटि गेल निन्न
तइओ देखू हम पड़ले छी
दए रहल मनो उठबाक नोंत
झाँझनक फाँकसँ हुलकि-हुलकि भोरुक इजोत !

सतलखा/1946

ताड़क गाछ

विकट पातर माँझ
एसगरे अछि ठाढ़ ताड़क गाछ
स्वयं सौंसे तर्जनी बनि,

विधातकें रहल अछि ललकारि
नहि उपस्थित करइ छन्हि ककरो बडौर लगाय
सब फूसि ओकरा हेतु !

जेठक रौद !
झमाझम बरसैत मूसलाधार;
माघक ठार;
चैतक तस;
सब फूसि ओकरा हेतु !

लगाबथु ग केओ कतेको जोर
बाप पित्तीकें करथु ग सोर
मुदा रोइयाँ एकोटा ओकर
उपाड़ल नहि हेतन्हि ककरो बुतें

प्रयाग/1946

द्वंद्व

चिरप्रवासी व्यर्थ हम अनका उपर
करिअउ कथी लए कनेको अभिरोष ?
कथी लए अनका दिअउ हम दोष ?
के मेटाओत कपारक ई लिखलहा
जन्म भरि हम सहब जननी वियोगक परिताप
क्रूर नियतिक भयंकर अभिशाप
नहि बहराइ अछि जे गामसँ बोमियाय
धन्न थिक ओ व्यक्ति
घरहि लग क लैछ कोनो वृत्ति वा व्यवसाय
स्वजन-परिजन देआद-बाद समेत

जकर जिनगी होइत छैक गुदस्त
उगइ अछि जाहिठाँ तहीठाँ होइत अछि जे अस्त
ज्ञान छइ जकरा फराक-फराक
चंद्र रवि ताराक...
चिड़इ चुनमुन्नीक...
चुट्टीक वा पिपड़ीक...
रूप गुण अनुसार जे आमक रखइ अछि नाम
धानक रखइ अछि नाम
जननि, तोहर प्राण, तोहर शक्ति
धन्य थिक ओ व्यक्ति !!

चिरप्रवासी हम तोहर संतान
दूरसँ भ ठाढ़ केवल क सकैत छिअहु किछु गुणगान
कोन लग्नें पएर राखल गंडकिक गंगाक हम एहि पार
बिसरि गेलहुँ
बागमती कमला बलानक–
तिलजुगा धेमुड़ाक–
रुद्ररूपा कौसिकिक ओ धार
बिसरि गेलहुँ माइ बापक भाइ बहिनिक स्नेह
बिसरि गेलहुँ
कोन माटिक कोन पानिक थिक बनल ई देह !

वर्षपर दू वर्षपर जँ जाइ छी हम देस
चारि दिनधरि से लगइ अछि बेश
ताहिसँ बेशी ओम्हर रहनाई
बुझि पड़इ अछि डाँड़
बुझि पड़इ अछि सब प्रकारें हानि
छिन्नमस्ता भगवती
थिकी ओ कुलदेवता...
हुनका करैत प्रणाम

छाड़ि क हम तरौनी सन गाम
चल अबइ छी दूर, बहुतो दूर
रेलपर चढ़ि चल अबइछी बहुतो दूर

एम्हर अबितहिँ
संगठित सन
बन्धुतामे परस्पर आबद्ध
रंग-बिरंगक लोक विविधाचार आर विचार
नीक हमरा लगइ अछि ई आधुनिक संसार
रेल मोटर ट्राम...
पोस्ट टेलीग्राम...
जलधिपर जलयान
नील नभमे श्वेत पीत विमान...
प्रेस बिजली रेडियो औ' फिल्म
नीक हमरा लगइ अछि ई आधुनिक संसार
सड़लि घोड़ीबला ओ सकुरीक एक्का
नहि पड़इ अछि मोन
फेर ओहि देहातमे हम किअए जाएब
प्रयोजन अछि कोन
किन्तु...
किन्तु की हम बिसरि पाएब
तरौनी-सन गाम ?
गरड़हा-सन आम ?
दीदिक इनारक पानि ?
अपन पोखरिक ओ ठुट्ट पातर जाठि ?
हरिअरिक सागर जकाँ हिलोर रहि रहि लैत
धनहर बाध कोसक कोस
चौठचन्द्रक पिड़किआ कोजागराक मखान
थलकमल ओ सिङरहारक फूल
देवउठान आर नवान

कलमखोड़ा कनकजीर सतरिआ कामोद...
परबापाँखि लछुमनभोग...
बिसरत कोना गमकैत मेहीं धान
नहि देलनि भगवान अपना खेत औ' खरिहान
तइओ गामपर चल जाइ अछि यदि ध्यान
तँ से ककर थिक साध्य ?

छला अपने मूर्ख
हमरा चारि आखर पढ़ा गेला बाप जे—
बौआ कमा क लगा देता टाल...
बुढ़ारीमे बैसि कँ हम खाएब...
हीतक सङे सतरंज खूब खेलएब...
आहि रे कप्पार !
हमर नहि से हुनक कर्मक दोष
पढ़ि गूनिकँ सन्तान लोकारण्यमे गेलन्हि जे भुतिआए
बुढ़ारीमे हकन्न जे कनलाह
मुइलाह जे अनका उपर द भार
बिन्दुओ भरि जलसँ तर्पण ने केओ केलकन्हि
हमर नहि से हुनक कर्मक दोष

करह जनु अपसोच
मुइल बहिनिक मुइल भाइक
मुइल बापक मुइल माइक
करह जनु अपसोच
गाम दिशि घुरबाक जनु इच्छा करह तों
पूर्वपरिचित व्यक्ति किंवा वस्तुसभहिक हेतु—
करह जनु अपसोच
चलह आगू पथिक तों छाड़न सभहिकें छाड़िं
देखलहक अछि श्रोतकें घुरियाय पाछाँ होएत ?
वन्य जीवन, ग्राम्य जीवन छाड़ि

आधिभौतिक शक्तिकें दासी बनओने जा रहल अछि
प्रगतिशील प्रबुद्ध मानव-नागरिक;
जन्मभरि तों गाम लए रहबह हकन्न कनैत ?
बुड़ित्वक ई मोह !
तोड़ि ताड़ि सलाइ
रगड़ि पाथरसँ आगि जँ करबाक होहु बाहर
नलकें भङठाए जँ कोड़बाक होहु इनार
फोड़ि बिजुलिक बल्ब जँ पतलोक धधरासँ–
इजोतक काज लेबक होहु
होहु जँ पुनि रेलगाड़ीसँ अधिक बसहेक पीठ पसिन्न
देहाती बहुरुपिआक अभावमे यदि
सिनेमासँ होहु ई मन खिन्न
आधुनिक विज्ञानसँ यदि बढ़ि तोरा
बुझि पड़हु एकादशी-माहात्म्य
छपइ छइ अखबारमे जे किछु सबटा फूसि–
ई बुझि फाड़ि जँ 'मिथिला मिहिर'
आँचे पजारक होहु तोरा म'न
तखन तों घुरि जाह गामहि
जमाइनसँ नीककँ छौंकवाय खइह खूब पटुआ साग
खूब खैइह ओल औ' अरिकौंछ
सरिसो देल माछक झोर
काँचे जमीरी गारि
पिबिहह सतत दीदिक इनारक पानि
अबइ छहु जे किछु से सब बिसरि जैइह
आम जामुन लताम कटहर सरिफ्फा केरा कि बड़हड़
लगबिइह भगवानकें ओ भगवतीकें भोग
एहिसँ यदि समय बाँचहु
से, गोलैसीमे लगबिइह
खेलैइह सतरंज चौपाड़–
अंखिगरक ई काज !

साँझकें सब दिन जैइह महादेवक थान
बोतू जकाँ बोकिआए गाल बजाय बम् बम्–
साम्वशिवकें भक्तिभाव देखाए
घुरिइह टोल
अपने आ कि अनके दरबज्जापर बैसि
तमाकू चुनबैत हँकिइह गप्प...
क रहल अछि तरक्की धरि राज
ल रहल अछि मोल दशटा पैघ वाइ जहाज...
ताहिमेसँ दुइटा
राजाबहादुर
खानगी रखताह
हड़ाही-मुड़ियाक बीचोबीच
लेनक दो-बगली
बड़का टा पाँतर पड़इ छइ
तही ठाँ बनतैक ओ मएदान
जाहि ठाँ रहतैक सुसतेतैक' वाइ जहाज...
लाट बनि गेला जमाहिरलाल–
सुनल से बुचुआक मातृक एहुसँ ओहि राति एबा काल...
दरबज्जापर बैसि
खूब हँकिइह गप्प

नहि, नहि
से कि हमरा बुतें कहिओ हएत, नहि, नहि !
वृद्धजन बिसुनाइ छथि,
बिसुनाथु
देखि आएल छी पुरनका ग्रामतंत्र टुटैत
समाजक संस्थानमे शत-शत दराड़ि फटैत।
घुराएब की मूँह पाछाँ दिस
से कि हमरा बुतें कहिओ हएत ?
राड़ भए गेल आइ फूजल ऊक

गोआर-गोंढि-अमात-धानुख-केओट केओ खएते ने ककरो ऐंठ

डोम धोबि चमार नहि पबनौट लेबए अओत
दुरदुरएबइ त उनटिक देत ओहो टोक
की करबैक
सकुरी, मधुबनी चल जएत
औ बिलाँ, अपने लोकनिकें
काज आओत पुरनका बहिखत ने किछुआ आब
बलचनमा कि ललचनमा
हड़ाही जाए
उघइ अछि मोटा
पबई अछि दुइ टका रोज

तोड़ि कँ हरिसिंहदेवक डाँड़
काल्हि जँ बौआ बिआहथि मेम
महाश्वेता बहुरिया
चनमाड़पर ओ आबि
बिहुँसि लगती गोसाउनिकें गोड़
तऽ अहाँ की छाड़ि कँ ई माटि
पड़एब चल जाएब मोरङ दिश ?

पटना/मई, 1947

ऋतु-संधि

चिर प्रतीक्षा कएल
बहुत ताकल बाट
जेठ बीतल
भेल नहीं बर्खा
रहल नभ ओहिना खल्वाट

आइ थिक आषाढ़ वदि षष्ठी
उठल अछि खूब जोर बिहाड़ि
तकरा बाद
सघन कारी घन-घटासँ
भए रहल अछि व्याप्त ई आकाश
आइ वर्षा हएत सजनि, होइत अछि विश्वास
भए रहल छथि अवनि पुलकित, लैत छथि निश्वास
मुदा अपना देसमे तँ हएत वर्षा भेल
सरिपहुँ एक नहि, कए खेप !
मुदित मनसँ लोक बेश गबैत हएत मलार
भरल होएत अबस्से भुतही बलानक धार
अपन पोखरिक ओ ठुट्ट पातर जाठि डूबल हएत
जकर जोर अदृष्ट से अंडाएल पोठी खएत
धान गम्हड़ी आँसु मड़ुआ मकई मूँग उड़ीद—
साम कॉओन जनेर
दूबि घास अनेर
की ने ई सभ लहलहाइछ
बीत भरि
दुइ बीत भरि
किंवा तहूसँ पैघ—
आँखि मुनि हम क रहल छी ध्यान
हरिअर बाध, हरिअर बोन...
कि लिखू हम एहि ठामक हाल
आगुएमे बहइ छथि भागीरथी
अछि सएह टा कल्याण
प्रबल गर्मिक तापसँ कहुना बचल अछि प्राण !
सजनि, नमरल घनघटाकें देखि
मोन होइछ, हमहु करिअइ—
कालिदासे जकाँ ओकरा सोर
के कहओ, नहि क सकै अछि ओ लिफाफक काज !

राति-दिन झरकी लगइ अछि
आरि धूरक नहि कोनहुठाँ रेख
निरंतर आगूमहँक ई नग्न पाँतर देखि
दुखाइत अछि माथ
चसमा अवइ अछि नहि काज
(हरिअरका कि करिआ—ओह !)
मुदा हमरा हवैत अछि विश्वास
अहू ठाँ, सखि, आब मूसलाधार बर्खा हएत
तखन नहि ई आँखि माथ दुखएत
भोरखन गंगा नहेबा काल
ठरल लागल पानि
बुझल तइखन,
हिमालयमे गलि रहल अछि बर्फ
भ रहल अछि ग्रीष्म आब समाप्त—
बर्खा प्राप्त...

प्रयाग/जून, 1947

वंदना

हे तिरहुत, हे मिथिले, ललाम !
मम मातृभूमि, शत-शत प्रणाम !
तृण तरु शोभित धनधान्य भरित
अपरूप छटा, छवि स्निग्ध-हरित
गंगा तरंग चुम्बित चरणा
शिर शोभित हिमगिरि निर्झरणा
गंडकि गाबथि दहिना जहिना
कौसिकि नाचथि वामा तहिना
धेमुड़ा त्रियुगा जीबछ करेह
कमला बाग्मतिसँ सिक्त देह

अनुपम अद्‌भुत तव स्वर्णांचल
की की न फुलाए फड़ए प्रतिपल
जय पतिव्रता सीता भगवति
जय कर्मयोगरत जनक नृपति
जय-जय गौतम, जय याज्ञवल्क्य
जय-जय वात्स्यायन ज़य मंडन
जय-जय वाचस्पति जय उदयन
गंगेश पक्षधर सन महान
दार्शनिक छला', छथि विद्यमान
जगभर विश्रुत अछि ज्ञानदान
जय-जय कविकोकिल विद्यापति
यश जनिक आइधरि सभ गाबथि
दशदिश विख्यापित गुणगरिमा
जय-जय भारति जय जय लखिमा
जय-जय-जय हे मिथिला माता
जय लाख-लाख मिथिलाक पुत्र
अपनहि हाथें हम सोझराएब
अपने देशक शासनक सूत्र
बाभन छत्री औ' भुमिहार
कायस्थ सूँड़ि औ' रोनियार
कोइरी कुर्मी औ' गोंढि-गोआर
धानुक अमात केओट मलाह
खतबे ततमा पासी चमार
बरही सोनार धोबि कमार
सैअद पठान मोमिन मीयाँ
जोलहा धुनियाँ कुजरा तुरुक
मुसहड़ दुसाध ओ डोम-नट्ट...
भले हो हिन्नू भले मुसलमान
मिथिलाक माटिपर बसनिहार
मिथिलाक अन्नसँ पुष्ट देह

मिथिलाक पानिसँ स्निग्ध कान्ति
सरिपहुँ सभ केओ मैथिले थीक
दुविधा कथीक संशय कथीक ?

ई देश-कोश ई बाध-बोन
ई चास-बास ई माटि पानि
सभटा हमरे लोकनिक थीक
दुविधा कथीक संशय कथीक ?
जय-जय हे मिथिला माता
सोनित बोकरए जँ जुअएल जोंक,
तँ सफल तोहर बर्छीक नोंक !

खएता न अयाची आब साग !
ककरो खसतैक किएक पाग ?
केओ आब कथी लै मूर्ख रहत ?
केओ अब कथी लै कष्ट सहत ?
केओ किअए हएत भूखें तबाह ?
केओ किअए हएत फिकरें बताह ?
नहि पड़ल रहत, भेटतैक काज !
सभ करत मौज, सभ करत राज !
पढ़ता गुनता करताह पास–
जूगल कामति, छीतन खवास
जे काजुल से भरि पेट खएत
ककरो नहि बड़का धोधि हएत
कहबओता अजुका महाराज
केवल कामेश्वरसिंह काल्हि
हमरालोकनि जे खाइत छी
खएताह ओहो से भात-दालि

अछि भेल कतेको युग पछाति
ई महादेश स्वाधीन आइ

दिल्ली पटना ओ दड़िभंगा
फहराइछ सभठाँ तिनरंगा
दुर्मद मानव म्रियमाण आइ
माटिक कण कण सप्राण आइ
नव तंत्र मंत्र चिंता धारा
नव सूर्य चंद्र नवग्रह तारा
सब कथुक भेल अछि पुनर्जन्म
हे हरित भरित हे ललित भेस
हे छोट छीन सन हमर देश
हे मातृभूमि, शत-शत प्रणाम !!

पटना/15 अगस्त, 1947

गाँधी

जय-जय परमपिता हे गाँधी
जय-जय जयति महाबलिदानी
ओह, अहाँक वियोग-व्यथामे
के नहि आइ कनइ अछि प्राणी
जा धरि रहता सूर्य-चंद्रमा
जा धरि ग्रहगण, जा धरि तारा
जा धरि बहती गंगा-गंडकि
बाग्मति कमला कोसिक धारा
जा धरि पृथिवी, सागर जा धरि
जीवित रहब अहाँ तहिआ धरि
काए-वचनसँ अथवा मनसँ
हिंसा कएल न कोनो जीवक
कोटिक कोटि मनुक्खक हित लए
जिनगी अपन बिताओल गरीबक
दुख ककरो नहि देल कनेको

अपने विपत उठाओल अनेको
जिवितहिं पसरल कीर्ति भुवन भरि
तेना बहाओल शांतिक सुरसुरि
जय-जय राष्ट्रपिता हे गाँधी
जय-जय जयति महाबलिदानी
कमल थलकमल भेंट, कुमुदनी
सिङरहार गेना गुलाबरी
इंद्रकमल औ' तीरा मधुरी
चम्पा बेली तथा चमेली
बंशीप्रेम दनुफ औ' जूही
सभ फूले थिक
ककरो सुरभि महा आह्लादक
केओ देखवहिटामे मनमोहक
ककरो रस बड़का औषध थिक
सभक प्रयोजन पड़ि जाइत छइ बेर कालमे
ककरो किए अनस्था करबइ
सभ फूले थिक
गाँथल रहओ सदक्षण सभटा एक तागमे
अहिना हिंदू मुसलमान सिख बौद्ध जैन ख्रिष्टान पारसी
रहओ एक भ
रहओ एक ठाँ
सभ मनुक्ख थिक
सभ एक्के थिक
देश आइ स्वाधीन भेल अछि सभक मेलसँ
सभक बुद्धिसँ
सभक यत्नसँ
सभक जोरसँ
सभक देह निर्माण भेल छइ
अही माँटिसँ अही पानिसँ अही अन्नसँ
सभक देह सप्राण भेल छइ

अही माँटिसँ अही पानिसँ अही अन्नसँ
एहि भूमिपर एहि देशपर सभक छैक अधिकार
अपनामे नहि करी अरे तकरार
ई सिखौल हे पिता अँही हमरालोकनिकें
कालनेमि थिक दुष्ट गोडसे देशभरिक थिक पाप
इतिहासक अभिशाप
क्षमा ने करतइ क्यो कहिओ ओकर महान अपराध
शूलवेध ईसाक
सुकरातक विषपान
ताहू सँ बढ़ि बुझि पड़ैछ
बापू अहाँक ई अति नृशंस प्राणांत
सुनि कँ ई वृत्तांत–
के नहि कानल हएत ?
क्षुब्ध-क्रुद्ध भ दैत बधिककें गारि–
वृद्ध पितामह, के ने अहाँकेर तर्पण कएने हएत ?
मुक्त देशमाताक हाथ निज कम्पित हाथ धएल !
देल अपन बलि
जन-जागरण-व्रत-उद्यापन कएल !!
जय जय परम पिता हे गाँधी;
जय जय जयति महा बलिदान !
ओह, अहाँक वियोग-व्यथामे
के नहि आइ कनइ अछि प्राणी !

पटना/मार्च, 1948

आसिन मासक राति इजोड़िया

आसिन मासक राति इजोड़िया
तिथि त्रयोदशी
झुलि झुलि गाबि रहल बटगमनी दोलङिक गम्हड़ा

बुढ़बा पिपरक ठूठ ठारिपर बैसल बैसल—
नीलकंठ कें कें करैत अछि
बितल दसहरा, ककरा छैक पुछारी ओक्कर आब
सभठाँ पोखरिमे फुलएल अछि भेंट कुमुदिनिक फूल
खाली हमरेटा भरिऔलक अछि भदबा ओ दिक्शूल
प्रकृति ने मानथि पंडितलोकनिक कालविवेचन
रुचिगर बेश लगैअछि हमरा धनहा खेतक गैंची
आरि आरि तैं बौआइत छी
डेढ़ पहर बिति गेल इजोड़िया आसिन मासक

दरभंगा/अक्टूबर, 1948

फागुनक इजोड़िया टहाटही

बोझल गाड़ी
सूतल अधवयसू बहलमान
नाथल ओ मुठिया सिंहवाला कैला बड़दक सुन्दर जोड़ी
जा रहल लीख धएने सोझहिं
पकिआ सड़कक काते काते
टुन टुन टन टन टन टिलिङ टाङ...
कर रहल निशीथक शांति भंग
मधुबनी दिशुक बोझल गाड़ी
भ भ चित-पट फैला फैला—
जुआक बाँहिपर पएर दुहू
दिनुका ठेही कें पचा रहल
सूतल अधवयसू बहलमान
फागुनक इजोड़िआ टहाटही

सकरी/फरवरी, 1949

युग धर्म

नहि मानइ अछि बात ओहिना अपनो बेटा-नाति
मास मास पर गहन लगइ अछि पल पल पर संकराँति
बदलि रहल अछि छन-छन दुनियाँ किछु नहि क्यों नहि थीर

भ गेलाह बाबा कपिलेसर आन्हर आर बहीर
सुनतहि नब नचारी बूढ़ाकें उठैत छन्हि खौंत
भरि-भरि ढाकी फाँकि जाइ छथि भाङ्क भनहि सुखौंत
शहर शहरमे फुजल सिनेमा, कियो नहि सुनए पुरान
ककरो नहि चिंता छइ जे खौंझा उठता भगवान
कोना छजत पहिलुक ढाठीपर आजुक टटका रङ
अपन महिंस कुल्हड़िअहि नाथब, के ने कहत अबढंग
खुटिया मिर्जइ नहि सोहाइ छइ पहिरए कोट-कमीज
बूड़ि ने कहिअउ, कन्हुआकँ ताकत बेटा-भतीज
कोना बुझब जे पूर्वजलोकनि रहथि वेश बुधिआर
पढ़ुआ कका करब जँ, नहि हमरासँ बात-बिचार

प्रयाग/मई, 1949

जेठक विकट दुफरिआ

जेठक विकट दुफरिआ
छाहरि दुबकलि बड़क गाछतर
किछु बैसल, किछु ठाढ़े ठाढ़े
आँखि मूनि कँ
पाजु करइ अछि माल जाल सभ
चिड़इ चुनमुनी कत गेल, ने जानि
धिपल लगइ छइ ऊपर ऊपर पानि
बोमिआइत अछि अठगामा पाड़ा पोखरिमे
बकरिक नेड़ी भरि भरि घरमे

खेला रहल भुल्ला चरबहा
दूनू दिस एसगरे सतघरा
जङ्लासँ सँसार देखइ छी
पड़ल पड़ल अप्पन खोन्हीमे
हमहुँ कहुना खेपि रहल छी जेठक विकट दुफरिआ

तरौनी/जून, 1949

देशदशाष्टक

पलरि गेल छन्हि नेतालोकनिक सूढ़
भ गेलाह जमाहिर थुत्थुर बूढ़
प्रभु पटेल छथि सर्वशक्ति-सम्पन्न
कनबथि तइओ चीनिक लेल हकन्न

बनिआ-लीडर-अफसर तीन त्रिमूर्ति
क रहला अछि अपन मनोरथ-पूर्ति
अपना लए सभ, अनका हेतु बङौर
तइपर फाटन्हि रहि रहि कते बुकौर

बापूक भजन करइ छथि साँझ परात
टकुरी काटथि बइसल सड़कक कात
जपथि सदक्षण अष्टोतर शत नाम
ईश्वर अल्ला रघुपति राघव राम .

भाय-भातिजक साढ़ूक सारक लेल
अपनहि चढ़िकँ, तोड़थि झोंझक बेल
धन्न भाग जे चानि ने छैन्हि उघाड़
नहि तँ कोना पचबितथि सौंस पहाड़

श्री श्रीकृष्ण अनुग्रह होथु सहाय

जनिक गुणक कीर्तन नहि कएना जाय
हे जनकवि हठ अपन पुरनका छाड़ि
आबहु जाउ बनू ग बिसुन-बिलाड़ि

अपनहि हाथें देता पान मखान
पाएब थुल थुल देहक तउलल दान
सत्त ने कउखन बाजी बजबी झालि
भेटत सोनक गुल्ली चानिक टालि

छन्हि तिनरंगा घोघ, ताड़ सन देह
रुच्छ अलच्छ पएर, कतहु नहि नेह
महगिक बड़का खरड़ा नेने ठाढ़ि
की होएत स्वाधीन एहिसँ बाढ़ि

धन्न रहू हे भारतमाता, धन्न !
महगिक मारल लोक कनैछ हकन्न !
ढाकिक ढाकि पास होए प्रस्ताव
तइओ बढ़ले जाइत सबथुक भाव

देशदशाष्टक जे पढ़थि मन लगाय नित प्रात
ओ पाबथि पार्सल सदए, जगर्नाथजिक भात

काशी/नवंबर, 1949

परम सत्य

फूसि थिक संसार
फूसि धरती, फूसि थिक आकाश
फूसि थिक ई माटी
फूसि थिक ई पानी
हम, अहाँ, ओ, ई, भने क्यो होथु–

व्यक्ति मात्र थिकाह अगबे फूसि
सत्य की तँ शून्य
सत्य की तँ ब्रह्म
सत्य की तँ घनानंद, अखंड, चित्, कूटस्थ,
—सैन्धवलवणसम नीरंध्र
सत्य की तँ जे ने देखल जाए
सत्य की तँ जकर गुण वर्णन न कएला जाए...
बाप-पित्ती पितामह-मातामहक मूँहसँ सुनल ई बात
जीबनक संग्राममे यदि आबि जइतए काज
तखन की छल !
तखन सरिपहुँ
हमहु बजितहुँ
फूसि थिक संसार
फूसि धरती, फूसि थिक आकाश
जूनि पूछी, आइ-काल्हुक हाल
नहि अबइ छथि काज कोनो ब्रह्म
नहि अबइ अछि काज ई कुल-गोत्र
शिखा-सूत्र त्रिपुंड चानन-ठोप
अबइ अछि किछु काज नहि ई पुरनका आटोप
फूसि सभटा थिक
थिक महाजंजाल
फूसि ब्रह्मा-विष्णु दश दिक्पाल
फूसि श्रुति-स्मृति
फूसि शास्त्र-पुराण
फूसि व्रत उपवास
फूसि थिक राजासभक इतिहास
सत्य की, तँ—
सत्य थिक ई माटि
सत्य थिक ई पानि
सत्य थिक ई संसार

सत्य धरती, सत्य थिक आकाश
हम, अहाँ, ओ, ई, थिकहुँ सब गोटे बड़का सत्य
सत्य जीवन, सत्य थिक संघर्ष
सत्य आशा, सत्य थिक आयास
सत्य थिक निर्माण चेष्टा, सत्य थिक आवास
सत्य थिक ई देह
सत्य थिक ई बुद्धि
सत्य थिक ई धैर्य आओर विवेक
सत्य थिक ई मनोबल अ-विजेय
सत्य थिक ई बाँहि
सत्य थिक ई हाथ–
जे एकरे प्रतापेँ कमा लइ छी चारि कैंचा नित्त
नहि अबइ छथि काज हमरा चारि हाथवाला ओ भगवान
नहि अबई अछि काज वेद-पुरान
छाड़ि अप्पन काज
अनेरे हम किए हएव हरान ?
नहि कुकर्म करैत छी जे 'नरक' जाएब 'यम' पकड़ता कान

करा लइ अछि काज राच्छस जखन दश टाकाक
तखन दइ अछि दूइ टाका, ओह !
पच्छ ओकरे लइ छथिन भगवान
पैघ लोकक–धनिकहा सबहिक
हाथमे छन्हि राम-कृष्णक टीक
जे बजइ अछि फूसि तकरा डरेँ थर थर कपइ छथि हलुमान

घूस रोटक पाबि दुष्टक पीठ ठोकथि काल भैरव-सन
बिकट बलवान

सत्त थिक मनुक्ख
सत्त थिक समाङ
धिआ-पुता स्वजन-परिजन खेत ओ खरिहान

मकइ मड़ुआ साम-कॉओन आँसु-गम्हड़ी धान
माछ-मधु फल-मूल पान-मखान
एहिसँ की बढ़ि होएत सत्य ?
जाहि भाखामे बजइ छी, सत्त थिक से बोल
आन बाणी थिक दूरक ढोल
सत्य ई जे बाप-माइक बीचसँ धिआ-पुता
ताहिसँ पुनि पौत्र-पौत्री नाति-नतिनी आदि
वंशवृक्षवितान
नित्य नूतन वस्तु सबहिक सदक्षण संधान
स्थिति-स्थापकताक पूर्ति संघर्ष
फेर परिवर्तन
पुनः निर्माण
स्थितिक स्थापन फेर
तखन पुनि गति-रोध
तखन पुनि संघर्ष...
एहि क्रमसँ निरंतर परिवर्तनमान प्रगतिशील समाज
जहिना ज्वैल बँसबिट्टीक दमगर ओधिमेसँ
फेर कोपड़
फेर पोरगर बाँस
फेर बाँसक झमटगरहा झौंझ...
सत्य ई क्षय वृद्धिकेर व्यवहार
सत्य ई संसार
चिंतनाक प्रवाहमे भसिआए
पुरखा लोकनि प्रायः
खसि पड़ल छलाह
जाहि सीमाहीन सागर-माँझ
('नेति-नेति'क बिकट मोनिक मध्य)
खसू ग की तहीमे हमरोलोकनि ?
आधिभौतिक उपद्रवसँ खिन्न,
प्रकृतिकेर रहस्य सँ संत्रस्त,

आदि मानव देखि लेलनि भीड़ जँ दिबड़ाक
आ' कि पीपर-पाकड़िक वा आम-जामुक गाछ
स्तुति कर' लगलाह तइखन, तकर पट द,
ऋचा निर्मित भेल
मानि लेलहुँ,
ताहि युगमे सएह छल हो सत्य
किंतु तैं की आई
दिवाड़क ओ भीड़
पीपर-पाकड़िक ओ गाछ
हमरालोकनिक कोनो वेगर्ता
करत कउखन शांत ?
वा वरदान कोनो देत ?
पिठारक घोड़कलस, दूधक धार—
व्यर्थ थिक, बेकार !
आइ काल्हुक मनुक्खक क्षमताक आगाँ
मानि लेलन्हि देवता-गण हारि
आब एटम बमक आगाँ भ' गेलन्हि अछि
भोथ चामुंडाक ओ तरुआरि
ताहि दिन छल एक पुष्पक
आइ नभमे विविध वर्ग विमान लाखक लाख
उड़ि रहल अछि शानसँ दिन राति
तरहथीक औंरा जकाँ सम्पूर्ण ई संसार
आब सबहक नजरि पर अछि साफ
आइ नहि तँ, काल्हि हिमगिरि मानताहे हारि
महोदय स्वाधीन ओ सम्बुद्ध—
सर्वसाधारण मनुक्खक लेल
की रहत अज्ञेय
के रहत अ-विजेय

धन्य हे श्रमशील मानव—विश्वभरिमे व्याप्त

धन्य तोहर जाति !
नरक कें सुरपुर बनएबाक लेल
सदच्छन तों रहइ छह अपस्याँत
एक दिशसँ तोड़ि रहला राक्षसक तों दाँत
सम्मिलित स्वेच्छा प्रणोदित जयति जय जन शक्ति !
हृदयमे अछि एक केवल तोहरेटा भक्ति
आन देवी-देवता दिश नहि नवइ अछि माथ
आई नहि तँ काल्हि दानवदलक करबह अबस्से उच्छेद
कृषक श्रमिकक जीवनो कें बनबिहह पुनिवेद
लैत प्राचीनक सगुण सद्ज्ञान
लोक हितमे लगबिहह अपना युगक विज्ञान
कियो ने रहते अकिंचन, सब हएत लक्ष्मीवान
सबहि कर्मठ सबहि भोगी हएत सभ विद्वान
एहि धरतीक ओहि स्वर्गक दिव्य सुख जँ हम कदाचित्
भोगि नहि पओलहुँ तखन भोगत हमर संतान
आइए हम मुक्त कंठे करइछी जनताक तैं जय-गान

जयति जनता-जनार्दन भगवान
कविक वाणी करओ दीपित आलसीहुक हृदयमे अभिमान
विजयिनी जनवाहिनी-सङसँ मिलितभ करओ ओहो—ओहिना अभियान

सत्य थिक संसार
सत्य थिक मानवसमाजक क्रमिक उन्नति—
क्रमिक वृद्धि-विकास
सत्य थिक संघर्षरत जनताक ई इतिहास
सत्य धरती, सत्य थिक आकाश
परम सत्य मनुक्ख अपनहि थिक

काशी/नवंबर, 1949

गोठबिछनी

बीछि रहल छैं बनगोइठा तों
घूमि घामि कएँ बाध-बोनमे
पथिआ नेने भेल फिरइ छैं
तिनू खूट, चारिओ कोनमे
मैल पुरान पचहथ्थी नूआ
सेहो फाटल चेफड़ी लागल
देहक रङ जमुनिआ, तइपर
मुँह माइक गोटीसँ दागल

बगड़ा जेना लगाबाए खोंता
तेहने रूच्छ केस छउ तोहर
दू छर हारी मात्र गराँमे
केहेन विचित्र भेस छउ तोहर

माघक ठार, रौद बइसाखक
तोरा लेखे बड़नी' धन सन
दीन बालिके अजगुत लागए
केहेन कठिन छउ तोहर जीवन

कने ठाढ़ि हो, सुन कहने जो
नाम की थिकउ, कतए रहइ छैं
बीतभरिक भए कोन बेगतें
एते कष्ट आ दुक्ख सहइ छैं

